आपके पत्र

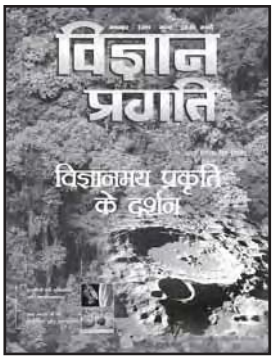

सर्वोत्तम पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का विगत लगभग 40 वर्षों से नियमित पाठक हूँ। इस अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि विज्ञान प्रगति का जो स्वरूप अब है वह पूर्व में कभी नहीं रहा। इस पत्रिका को और अधिक आकर्षित बनाने के लिए इसके मूल्य में की गई वृद्धि कोई अधिक नहीं है। इतिहास के कुछ कालखण्ड को छोड़कर भारत में वैज्ञानिक विधि की सनातन परम्परा रही है। आज भी हमारे वैज्ञानिक अच्छा कार्य कर रहे हैं। उस ज्ञान का कोई मूल्य नहीं जो जन साधारण तक न पहुँचे। विज्ञान प्रगति वैज्ञानिकों द्वारा निर्मित ज्ञान को आम आदमी तक ले जाने का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रही है।

विज्ञान प्रगति के पृष्ठ बढ़ाना तथा उसके संपूर्ण कलेवर को रंगीन बनाना समय की मांग थी। संपादकीय टीम ने समय पर निर्णय कर अपनी सूझबूझ का परिचय दिया है जो एक अच्छी तथा स्वागत योग्य बात है। वर्तमान में विज्ञान प्रगति के समकक्ष कोई अन्य पत्रिका नहीं है जो लाखों पाठकों से उनकी मातृभाषा में संवाद करती हो। विज्ञान प्रगति के स्तम्भ अच्छे हैं, समसामयिक विषयों को लेकर एक विज्ञान कथा दे दिया करें तो सोने में सुहागा का काम करेगी। सबसे अच्छी बात तो इसके प्रकाशन की नियमितता ही है। प्रत्येक माह के प्रथम दिवस पर विज्ञान प्रगति हमें उपलब्ध हो जाती है। विज्ञान प्रगति के संपादक व उनकी संपूर्ण टीम को उनकी सफलता पर बधाई।

श्री विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी, (पूर्व प्रधानाचार्य एवं विज्ञान लेखक)
2 तिलक नगर, पॉली - 306 401 (राजस्थान)

आवश्यक जानकारी

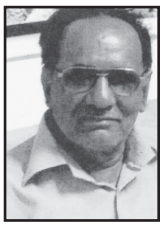

नवम्बर 2009 की विज्ञान प्रगति के अंक में छपी मेरी रचना 'अब भारत में भी शुतुरमुर्ग और ऐमू पालन' के बाद मेरे पास पाठकों के प्रतिदिन अनेक फोन कॉल आ रहे हैं, जिसमें ऐमू तथा शुतुरमुर्ग फार्मों के पते मांगे जा रहे हैं। विज्ञान प्रगति के प्रबुद्ध पाठकों की जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए मैं कुछ ऐसे व्यावसायिक फार्मों के फोन नंबर तथा वेब साइट के नाम नीचे दे रहा हूँ। मैं आशा करता हूँ कि पाठकों की जानकारी हेतु यह उपयोगी सिद्ध होगी। धन्यवाद!

ऐमू तथा शुतुरमुर्ग पक्षियों के कुछ व्यावसायिक फार्मों का विवरण

- फोन : 09930177797, 09867677797, 09819377797
  Website: www.pioneeremu.com
  E-mail : info@ pioneeremu.com, feedback@ pioneeremu.com
- फोन : 02512408196, 09820163529, फैक्स: 02512408196
  Website: www.yeshwantemufarm.com
  E-mail : nirmitithermo@yahoo.co.in
- फोन : 020 56111854, 020 56111855, 020 56111856,
  Website: www. kemppl.net
  E-mail : info@kemppl.net, kemppl@rediffmail.com
- फोन/ फैक्स : 0413-2353083, मोबाइल: 09344628712
  Website: www. emuvr3.com
  E-mail : jegan@ emuvr3.com
- मोबाइल: 098940 30026, 09360202906
  Website: http://apoorvaagrofarm.org
  E-mail : info@ apoorvaagrofarm.org
  apoorvaagrofarm.org @gmail.com
- मोबाइल: 09943340785, 09364222174
  Website: www. emuoilindia.com
  E-mail : emufarms@gmail.com, prabhu@emuoilindia.com
- मोबाइल: 093631 27989, 098658 97989, 098658 96989
  Website: www. tamilnaduemubird.com
  E-mail : rk@ tamilnaduemubird.com
- फोन/फैक्स: 040 39128484 मोबाइल: 09866073969
  Website: http://www.goldenemufarms.com/

श्री बिमल श्रीवास्तव, जी-11, ग्रीन पार्क एक्सटेन्शन, द्वितीय मंजिल, नई दिल्ली-110016 [मोबाइल : 09810604778
ई-मेल : bksrivastava2000@gmail.com
bksrivastava2000@yahoo.co.uk]

सर्वोपयोगी पत्रिका

विज्ञान प्रगति पत्रिका न केवल मुझ जैसे विज्ञानी लोगों की प्रिय पत्रिका है बल्कि विद्यार्थी वर्ग, अध्यापक समुदाय तथा गृहणियों आदि के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। पिछले वर्षों के दौरान विज्ञान प्रगति के वैज्ञानिक कंटेंट, साज-सज्जा तथा स्तरीयता में जो परिवर्तन आए हैं, उनसे मुझे लगातार खुशी हुई है। इतना ही नहीं, इसके लेखक के नाते मुझे स्वयं को निखारने-सुधारने की प्रेरणा भी मिली है। अब पिछले दो अंकों में विज्ञान प्रगति में और पृष्ठ भी जुड़े हैं जोकि अनेक पाठकों की मांग थी। तभी मुझे आश्चर्य नहीं हुआ कि इसके दाम में हुई वृद्धि की शिकायत किसी भी पाठक ने नहीं की है। विज्ञान प्रगति का नया कलेवर और इसमें समाहित ज्ञान-विज्ञान राष्ट्रभाषा हिंदी को सचमुच नया गौरव प्रदान कर रहे हैं। जाहिर है कि इन प्रयासों के पीछे कई समर्पित व्यक्तियों की जबर्दस्त मेहनत-मशक्कत है। अतः संपादन-मंडल के साथ-साथ हमें भी इन सभी का आभार व्यक्त करना चाहिए। इतना ही नहीं, पत्रिका के निखार ने लेखकों व पाठकों सहित सभी का कद बढ़ाया है, इसके लिए हम अनुग्रही हैं और हाँ, 'हंसते जाओ, पेट घटाओ' जैसे पन्ने के समावेश के बोल्ड निर्णय के लिए भी संपादक धन्यवाद के पात्र हैं।

डा. देवकी नंदन, 2205, न्यू जय भारत सोसायटी, प्लॉट-5, सेक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110 075
[मो. : 09910332145]

विज्ञान प्रगति : आदर्श गुरु

मैं विज्ञान प्रगति का सन् 2008 से नियमित पाठक हूँ। विज्ञान प्रगति हमारे लिए किसी गुरु से कम नहीं है क्योंकि यह हमें विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े रहने के लिए हमें प्रेरित करने के साथ-साथ हमारा मार्गदर्शन भी करती है इसलिए मैं विज्ञान प्रगति को अपना आदर्श गुरु मानता हूँ। मैंने विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2009 का अंक पढ़ा। यह मुझे अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्द्धक लगा क्योंकि इस अंक में अंतरिक्ष के बारे में ढेर सारी जानकारियां प्रकाशित हुईं थीं। इसके लिए मैं विज्ञान प्रगति की पूरी टीम को धन्यवाद देता हूँ। आमुख कथा 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' के अन्तर्गत प्रकृति के विभिन्न रंगों के बारे में जाना

ज्ञानमयी पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का विगत कई वर्षों से नियमित पाठक हूँ। मुझे प्रत्येक माह विज्ञान प्रगति का बेसब्री से इंतजार रहता है। मैं इस समय पर्यावरण संरक्षण का कार्य कर रहा हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति से जितनी रोचक जानकारियां प्राप्त होती हैं वह अन्य किसी पत्रिका से नहीं। नवम्बर 2009 में प्रकाशित 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' को पढ़कर मुझे जो ज्ञान प्राप्त हुआ उसका जिक्र करना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। यह लेख मेरे विषय से संबंधित है इसलिए मैं धन्यवाद देता हूँ और बताना चाहता हूँ कि यही वो पत्रिका है जिसने मुझे पर्यावरण की रक्षा करना सिखलाया और मुझे 'पर्यावरण चिंतक' की जो उपाधि मिली है उसका श्रेय विज्ञान प्रगति को ही जाता है। नवम्बर 2009 के अंक में ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण : दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं, चंद्रमा पर जल विश्व में हलचल, चन्द्रमा पर मानव बस्तियाँ और उनके चित्र आदि लेख मुझे बहुत ही अच्छे लगे। समाज को ज्ञानमयी बनाने वाली इस पत्रिका को मैं धन्यवाद देता हूँ। विज्ञान प्रगति को समर्पित मेरी कुछ काव्य पंक्तियां इस प्रकार हैं :

'गीतों की जरूरत महफिल में होती है ।
प्यार की जरूरत हर दिल में होती है।।
बिना विज्ञान प्रगति के अधूरी है यह जिन्दगी।
क्योंकि विज्ञान प्रगति की जरूरत हर पल होती है।।'

श्री हृदय नारायण गुप्ता, (पर्यावरण चिंतक) ग्रा./पो.-टेऊंगा, जिला - प्रतापगढ़ - 230 001 (उ.प्र.)
[मो. : 09793434450, 09793821499;
ई-मेल : hnguptapdh@rediffmail.com]

आपके पत्र

जिसका प्रभाव यह हुआ कि प्रकृति का अवलोकन करना मेरी हॉबी बन गया है। विशेष लेख के अन्तर्गत 'ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण : दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं' को पढ़कर विश्वभर में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की दूरबीनों तथा इनकी क्रियाविधियों के बारे में जानकर काफी हर्ष हुआ। महान खगोलशास्त्री 'एडविन पावेल हब्बल' के जीवन के बारे में भी जाना। उनके द्वारा प्रतिपादित 'हब्बल नियम' को पढ़ा और मैं एक नये नियम से अवगत हुआ। विज्ञान गल्प के अन्तर्गत मैंने 'एलियन्स से युद्ध' नामक रचना पढ़ी जिससे मैं भविष्य के बारे में सोचने के लिए विवश हो गया और प्रार्थना की कि हम लोगों के जीवन में कभी भी ऐसा दिन न आये।

रोचक जानकारी के अन्तर्गत 'चन्द्रमा पर मानव बस्तियाँ' के बारे में पढ़ा और सोचा कि यह सच हो जाये जिससे हमारे वैज्ञानिकों के नाम एक और उपलब्धि जुड़ जाए तथा हम लोगों को उन पर गर्व हो। कितना सच कितना झूठ के अन्तर्गत उड़नतश्तरियों के अस्तित्व के बारे में जानकर मैं काफी आश्चर्यचकित हुआ। विज्ञान प्रगति के नवम्बर 2009 अंक के लिए एक कविता रूपी पंक्ति इस प्रकार है :

सूरज की किरणों से पृथ्वी पूर्णतया नहा जाती है।
विज्ञान प्रगति सरल भाषा में ज्ञान की बातें फैलाती है।।

श्री शुभम साहनी, सुपुत्र श्री मंगल प्रसाद साहनी, आ. ला. सुल्तानपुर (शितला धाम) अदलपुरा, मिर्जापुर - 231304 (उ.प्र.) [मो. : 09793809927, 09389238745; ई-मेल : shubham.sahani 2050@gmail.com]

विज्ञान प्रगति : ज्ञान में वृद्धि

आवरण पृष्ठ से ही 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' कराता हुआ विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2009 का अंक प्राप्त हुआ। जहां एक ओर आमुख कथा ने 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' कराए, वहीं दूसरी ओर 'समस्याओं के हल, खुद करिए पहल'! के नामक बॉक्स ने गाजर घास (*पार्थीनियम हिस्टेरोफ़ोरस*) के विषय में जागरूक किया। प्रकृति के सुंदर व विशाल पक्षी शुतुरमुर्ग व ऐमू पर बिमल श्रीवास्तव जी ने हमें बड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध करायी। इस अंक में 'चन्द्रमा पर जल विश्व में हलचल' के अन्तर्गत अब तक के चंद्र अभियानों का विवरण पढ़कर हमारे ज्ञान में वृद्धि हुई तो वहीं नासा द्वारा सन् 2018 से 2024 के मध्य तक 'चंद्रमा पर मानव बस्तियां' बसाने की रोचक जानकारी भी प्राप्त हुई। एक रिपोर्ट ने 'मिशन पूर्ण सूर्य ग्रहण 2009' के द्वारा हमारे अंदर रोमांच भर दिया। विशेष लेख 'दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं' के अन्तर्गत अंतरिक्षीय और भू-दूरबीनों के विषय में महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुईं। यह सत्य है कि दूरबीनों के विषय में इतनी गहरी जानकारी हमें पहले कभी नहीं मिली। 'उड़नतश्तरियों का अस्तित्व' लेख पढ़कर 'कितना सच कितना झूठ' वास्तव में पता चला। पत्रिका में 'विज्ञान क्विज़' व 'सवाल जब जब, जवाब तब तब' आदि प्रश्नोत्तरी कॉलमों की कमी खली है। आपसे अनुरोध है कि आप महान गणितज्ञ आर्यभट्ट पर भी लेख प्रस्तुत करें।

गा रहा हूँ मंगल गीत, प्रिय पत्रिका विज्ञान प्रगति के।
प्रगति करती रहे यह और छू ले शिखर आसमान के।।

श्री नरेश कुमार, सुपुत्र श्री हरीराम सिंह, गांव - चचूला, डॉ.- दनकौर, जिला-गौतम बुद्ध नगर - 203 201 (उ.प्र.)

गागर में सागर

विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2009 का अंक पढ़ा जो महत्वपूर्ण, रोचक व आकर्षक लगा। इस अंक द्वारा अनेक महत्वपूर्ण भौगोलिक जानकारियां प्राप्त हुईं। आमुख कथा 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' के अन्तर्गत जीव-जन्तु, पेड़-पौधों, पशु-पक्षी, व सूक्ष्म जीव आदि के अलावा निर्जीव पदार्थों के बारे में भी महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ जो कि गागर में सागर के समान है। 'समस्या का हल खुद करें' पर प्रकाशित सूरज के जीवन की कहानी काफी अच्छी लगी। श्री निमिष कपूर द्वारा लिखित रिपोर्ट में पूर्ण सूर्य ग्रहण 2009 के बारे में दी गई जानकारी काफी रोचक लगी। दूरबीनों की भूमिका एवं आवश्यकता के बारे में हमें उतनी जानकारी नहीं थी जो अब इस अंक द्वारा हमें प्राप्त हो चुकी है। विशेष लेख 'चंद्रमा पर जल विश्व में हलचल' काफी अच्छा लगा। विज्ञान गल्प में 'एलियन्स से युद्ध' की संभावना बताकर आपने हमें अच्छी जानकारी दी। विशेष लेख के अन्तर्गत हमें भारत में शुतुरमुर्ग और ऐमू पालन की जानकारी प्राप्त हुई। मुझे वैज्ञानिक अट्टहास भी काफी अच्छा लगा क्योंकि यह मनोरंजन के क्षेत्र में काफी अच्छी जानकारी के समान है। अंत में मैं विज्ञान प्रगति की प्रशंसा अपने इन शब्दों से करना चाहूँगा :

विज्ञान प्रगति है ज्ञान रूपी पत्रिका, इसमें है ज्ञान विज्ञान का भण्डार।
कर देती है प्रकाशमय जग को, इस पत्रिका का तथ्य अपार ।।

श्री विकास कुमार शर्मा, सुपुत्र श्री गौरीशंकर शर्मा, शिवाजी नगर, जित्तु गाछी, सरफुद्दीन मुहल्ला, पो.-लालबाग दरभंगा - 846 004 (बिहार) [मो. : 09304418300/09334446555 ई-मेल : svikashkumar 19@ yahoo.com]

ज्ञानवर्द्धक अंक

मैं विज्ञान प्रगति का सन् 2005 से नियमित पाठक हूँ। विज्ञान प्रगति के 58वें वर्ष का 11वां अंक (नवम्बर 2009) पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह अंक अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक और नई-नई जानकारियों से परिपूर्ण था। इस अंक में ऐसी सामग्री पढ़ने को मिली जो विज्ञान विषयक होते हुए भी सामान्यजनों के लिए भी अत्यंत लाभदायक है। इस अंक की आमुख कथा 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' में श्री संजय कुमार ने सर्वोपयोगी लेख लिखा। इस लेख के माध्यम से हमें प्रकृति से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण व उपयोगी जानकारियां मिलीं। विशेष लेख 'ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण : दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं' के माध्यम से अनेक प्रकार की दूरबीनों के बारे में जानकारी हासिल हुई। रोचक जानकारी के अन्तर्गत 'चन्द्रमा पर मानव बस्तियाँ' लेख मुझे बेहद अच्छा लगा। इस लेख से ज्ञात हुआ कि अब चन्द्रमा पर मानव भी रह सकेगा। श्री बिमल श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत विशेष लेख 'अब भारत में भी शुतुरमुर्ग और ऐमू पालन' पढ़ने से जो जानकारी प्राप्त हुई वह मेरे लिए एकदम चिरअविस्मरणीय है। शुतुरमुर्ग व ऐमू पक्षी सुन्दर होने के साथ-साथ मानव जीवन के लिए भी काफी उपयोगी हैं। इनके पालन से धनोपार्जन भी किया जा सकता है। लेकिन दुख की बात है कि शिकारियों द्वारा इनका शिकार किये जाने से व सरकार का इनके संरक्षण पर विशेष ध्यान न दिये जाने से इनका अस्तित्व खतरे में पड़ता जा रहा है। इसके अलावा स्थायी स्तंभ 'वैज्ञानिक अट्टहास' मन को भा गया। यह अंक अपने में 'गागर में सागर' की तरह था। इस अंक में स्थायी स्तंभ 'सवाल जब जब जवाब तब तब', विज्ञान क्विज़ व विज्ञान प्रश्न गायब होने से इसकी मिठास कुछ कम महसूस हुई। मुझे विज्ञान प्रगति के अंक एकत्र करने का बहुत शौक है। मैं इसके प्रत्येक अंक को संभाल कर रखता हूँ।

विज्ञान प्रगति को समर्पित मेरी काव्य पंक्तियां कुछ इस प्रकार हैं :

विज्ञान प्रगति लगती प्यारी, जो है हम सबकी यह दुलारी।
नई-नई जानकारियां लेकर आती, विज्ञान की बातें हमें बताती।
रोचक जानकारी बहुत है भाती, पर वैज्ञानिक अट्टहास से खूब हंसी है आती।

श्री विमल वर्मा, सुपुत्र श्री गंगाराम वर्मा, मोहल्ला दुर्गाप्रसाद, निकट कोल्ड स्टोर, बीसलपुर, जिला - पीलीभीत - 262 201 (उ.प्र.) [मो. : 09719869622, 09675136258, 09917109681]

विज्ञान प्रगति : ज्ञान का सागर

विज्ञान प्रगति के 58वें वर्ष का 11वां अंक (नवम्बर 2009) प्राप्त हुआ। इसके बदले हुए कलेवर तथा नये रूप के साथ ज्ञान का भण्डार भी बढ़ा। बालदिवस पर विशेष विज्ञान प्रगति का यह अंक बहुत ही दिलचस्प और रोचक था। कालीशंकर जी का लेख 'ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण : दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं' बहुत ही अच्छा लगा। इस लेख में विभिन्न प्रकार की दूरबीनों के बारे में जानकारी मिली। जबकि राकेश शुक्ला जी का लेख 'खगोलशास्त्री एडविन पावेल हब्बल' जिनके नाम पर विश्व विख्यात हब्बल अंतरिक्ष टेलीस्कोप का नाम रखा गया, से बहुत ही महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ। 'चंद्रमा पर जल विश्व में हलचल' लेख बहुत ही ज्ञानवर्द्धक रहा। चन्द्रयान-1 द्वारा पानी की खोज से अंतरिक्ष में क्रांति पैदा हुई है। विश्व के सबसे बड़े पक्षी शुतुरमुर्ग और ऐमू के बारे में जानकारी बहुत ही अच्छी लगी। आमुख कथा के अन्तर्गत 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' लेख में हमें प्रकृति से बहुत कुछ सीखने को मिला। उड़नतश्तरियों का अस्तित्व लेख को पढ़कर महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई।

श्री मुहम्मद आफताब आलम, सुपुत्र मु. इसराईल, ग्रा.-चन्दायर बलीपुर, पो.-चैनपुर, गुलौरा, जिला - बलिया -221 517 (उ.प्र.) [मो. : 09580839039]

आपके पत्र

रोचक अंक

विज्ञान प्रगति के नवम्बर 2009 के अंक में छपा लेख 'चन्द्रमा पर जल विश्व में हलचल' बेहद रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक लगा। आमुख कथा के अंतर्गत 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' लेख पढ़कर भी अद्भुत अहसास होने के साथ-साथ ज्ञात हुआ कि प्रकृति अपनी गोद में कितनी विविधताओं को समेटे हुए है। शुतुरमुर्ग और ऐमू पालन की जानकारी भी अत्यंत रोचक लगी, आशा है बहुत सारे युवा इसे व्यवसाय के रूप में अपनाकर अर्थोपार्जन भी कर सकेंगे।

श्री लोकेश रंजन त्रिपाठी, सुपुत्र श्री गौतम त्रिपाठी, ग्राम व पो. - अरदेवा, वाया - तरैया, जिला - सारण 841 424 (बिहार) [मो. : 09335710870; ई-मेल : lokekshtripathi91@g.mail.com]

अत्युत्तम अंक

दो वर्ष पूर्व जब मैंने पहली बार विज्ञान प्रगति नामक यह पत्रिका पढ़ी तभी मुझे लगा जैसे मैंने ज्ञान का अनमोल खजाना पा लिया है। तबसे नियमित रूप से मैं इस पत्रिका का पाठक रहा हूँ। इसका प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक एवं रोचक होता है। मुझे हमेशा इसके आने वाले अंक का इंतजार रहता है। नवम्बर 2009 के अंक में छपा आलेख 'ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण : दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं' तथा खगोलशास्त्री एडविन हब्बल के बारे में दी गई जानकारी अत्युत्तम थी। विज्ञान गल्प के अंतर्गत 'एलियन्स से युद्ध' ने रोमांचित कर दिया। उड़नतश्तरियों से संबंधित विषयवस्तु भी अच्छी लगी। विज्ञानमयी प्रकृति के दर्शन और चन्द्रमा पर मानव बस्तियाँ लेखों ने काफी आकर्षित किया।

श्री प्रकाश सिंह चौहान, सुपुत्र श्री सुरेश बहादुर सिंह, ग्रा. व पो.-कनावन, वाया-कुण्डा, जिला-प्रतापगढ़ (उ.प्र.) [मो. : 09580752852]

अमूल्य पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का एक नया पाठक हूँ। नवम्बर 2009 का अंक पढ़कर लगा कि शायद मेरा बहुत बड़ा दुर्भाग्य था कि अब तक मैं इस अमूल्य ज्ञानवर्द्धक पत्रिका से अनभिज्ञ रहा। विज्ञान गल्प 'एलियन्स से युद्ध' तो सचमुच दिल को छू गयी। इसके अतिरिक्त विशेष लेख 'ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण : दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं' नैनोटैक्नोलॉजी तथा शुतुरमुर्ग और ऐमू पालन पर प्रस्तुत लेख रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक लगे। सबसे अच्छा तो वैज्ञानिक अट्टहास 'हँसते जाओ पेट घटाओ' लगा। सच पूछो तो यह पत्रिका मेरे दिल को छू गई है। मैं इसके अगले अंक का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ।

श्री विमल मोहन पाण्डेय 'सोनू' ग्रा.-इटौरा, पो. - मसोधा, जिला - फैजाबाद (उ.प्र.) [मो. : 09838808970/09838808770]

कलात्मक पत्रिका

विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2009 का अंक पढ़ा। इसका हरेक अंक अपने पहले अंक से अधिक कलात्मक और आकर्षक प्रतीत होता है। इस अंक में श्री संजय कुमार द्वारा प्रस्तुत आमुख कथा 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' के अंतर्गत 'समस्याओं के हल, खुद करिये पहल' बहुत रोचक लगा तथा गाजर घास के बारे में जो जानकारी मिली वह अमूल्य है। साथ ही यह जिज्ञासा हुई कि हम भी सूरज की तरह अपने पास-पड़ोस तथा गांव की समस्याओं का हल मिल-जुलकर खुद निकालें। जिस तरह सूरज ने लोगों की सहायता से गाजर घास जैसे विनाशकारी पौधों को अपने गांव से हमेशा-हमेशा के लिए विदा कर दिया उसी तरह के कार्य हम क्यों नहीं कर सकते। ठीक ही कहा गया है :

'कौन कहता है आसमां में छेद नहीं हो सकता।
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।।

विशेष लेख 'ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण : दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं' से यह पता चला कि दूरबीन की ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है। विज्ञान गल्प तो विज्ञान प्रगति का एक अटूट कॉलम है जिसके बिना पत्रिका सूनी-सी लगती है। इसके अतिरिक्त सवाल जब जब जवाब तब-तब, विज्ञान क्विज़ तथा वैज्ञानिक अट्टहास विज्ञान प्रगति के अनूठे कॉलम हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि विज्ञान प्रगति क्या चीज़ है?

श्री विवेक कुमार सिंह, 'अंशू' ग्रा.-ईटगांव, पो.-मिल्कीपुर, जिला-फैजाबाद - 224 164 (उ.प्र.) [मो. : 09919007473, 09696777483, 09453171776]

परिपूर्ण अंक

विज्ञान प्रगति का नवम्बर 2009 का अंक प्राप्त हुआ। इस अंक की आमुख कथा के अंतर्गत 'विज्ञानमय प्रकृति के दर्शन' पढ़कर अच्छा लगा। इस लेख को पढ़कर यह महसूस हुआ कि अपने अंदर विविधताओं को समेटे हुए भी प्रकृति का यह रूप मानव जाति के लिए कितना हितकर है साथ ही एक दूसरे से अन्योन्याश्रित भी। विशेष लेख के अंतर्गत ' ब्रह्माण्डीय प्रक्षेण : दूरबीनों की भूमिकाएं और आवश्यकताएं' में दूरबीन के अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में बढ़ते हुए व्यापक प्रयोग के बारे में जानकर अच्छा लगा। साथ ही इसके आविष्कारक महान वैज्ञानिक 'गैलीलियो गैलिलाई' को शत्-शत् नमन, जिन्होंने काल कोठरी में नारकीय जीवन व्यतीत करते हुए भी मानवता के प्रति इतना बड़ा योगदान दिया। अन्य विशेष लेख 'चंद्रमा पर जल विश्व में हलचल' भी बहुत ही अच्छा लगा। इसके अलावा मनोरंजन के दृष्टिकोण से वैज्ञानिक अट्टहास भी पसंद आया। इस प्रकार यह अंक अपने में परिपूर्ण व लाभान्वित करने वाला साबित हुआ।

श्री चंदन कुमार यादव, 'द्वारा श्री सज्जन प्रसाद, उमा कुंज, बुद्ध नगर, रोड नं. - 2, पोस्टल पार्क, कंकड़बाग - 800 001, पटना (बिहार)

सृजनात्मकता से परिपूर्ण

विज्ञान प्रगति का अक्तूबर 2009 का नये कलेवर में प्रकाशित अंक प्राप्त कर अत्यंत प्रसन्नता हुयी। विज्ञान प्रगति के इस अंक में आमुख कथा के अन्तर्गत कुलदीप शर्मा जी की प्रस्तुति 'क्या होगा... . दाने-दाने पर खाने वाले का नाम?' ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि यदि हमने समय रहते खाद्य उत्पादन नहीं बढ़ाया तथा जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं किया तो एक समय ऐसा आयेगा जब विश्व की आधी जनसंख्या भूख से व्याकुल होकर समाप्त हो जायेगी। हमे सूखे तथा बाढ़ जैसी समस्याओं के साथ-साथ बढ़ती हुयी जनसंख्या पर भी नियंत्रण करना होगा।

विज्ञान प्रगति अत्सन्त उत्कृष्ट, उपयोगी, ज्ञानवर्द्धक एवं कम कीमत में उपलब्ध होने वाली पत्रिका है। इस पत्रिका के माध्यम से हम मध्यमवर्गीय परिवार के विद्यार्थियों को विज्ञान से जुड़ी अत्यंत रोचक एवं उपयोगी बातें पता चलती हैं। इस अंक में मुझे 'दाल रोटी के रिश्ते में पड़ती दरार' लेख अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विचारणीय लगा। एक रिपोर्ट 'विज्ञान : स्वस्थ एवं सर्वजन हिताय दृष्टि देने की आवश्यकता' को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। विशेष लेख 'गन्ने के उप-उत्पादों से बहुउपयोगी उत्पाद' से गन्ने से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुयीं। इसके अतिरिक्त 'पांव जमाती स्ट्राबेरी में विघ्न डालते कार्यिकीय विकार' विशेष लेख की प्रस्तुति भी अच्छी लगी। रोचक जानकारी के अन्तर्गत 'पारम्परिक देशी मूल के बीजों के विशेषताएं और उनका महत्व' को पढ़कर बीजों के जननद्रव्य, निर्माण आदि के बारे में पता चला। राजेन्द्र सिंह तंवर एवं प्रेम दुरेजा जी द्वारा प्रस्तुत लेख 'यूरिया, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं वातावरण' को पढ़कर यूरिया के गुण धर्म, इतिहास आदि के बारे में उत्कृष्ट जानकारी प्राप्त हुयी। सवाल जवाब स्तम्भ के अन्तर्गत डॉ देवकीनंदन जी की प्रस्तुति 'सवाल जब जब जवाब तब तब' में विज्ञान के रोचक प्रश्नों तथा उनके रोचक उत्तर जानने का सुअवसर प्राप्त हुआ। विज्ञान प्रगति के इस स्तम्भ को मेरे मित्र एवं अध्यापक अत्यंत पसंद करते हैं। नवीन जानकारी 'जैविक खाद्य : संपोषित कृषि का आधार', विज्ञान समाचार, विज्ञान क्विज़ आदि अत्यंत महत्वपूर्ण लगे। विज्ञान नाटिका 'मच्छर की महिमा' व वर्ग पहेली पसंद आयीं। विज्ञान प्रगति के इस अंक को पढ़कर मन में यह पंक्ति गूंज उठी।

अंधविश्वास और आडम्बरों से, जब प्रकृति की हो रही थी दुर्गति।
विज्ञान प्रगति ने तब जलाकर, अलख ज्योति जग को दिखलाई सद्गति।।

निःसंदेह यह पत्रिका अद्वितीय एवं सृजनात्मकता से परिपूर्ण है।

सुश्री प्रियंका देवी, सुपुत्री श्री ध्रुव कुमार सोनी, बड़ी बाजार, मो. गंगारामपुर, पो. - मल्लॉवा, जिला - हरदोई (उ.प्र.) [मो. : 09919032243]